महाराष्ट्र में गन्ने की तेजी से बुआई

सुशील मिश्र
मुंबई, 7 जुलाई

महाराष्ट्र के ज्यादातर हिस्सों में बारिश से किसानों के चेहरे खिल गए हैं, लेकिन पूरा जून सूखा रहने का असर खरीफ फसलों की बुआई पर पड़ा है। जून में बारिश न होने के कारण अनाज, दलहन, तिलहन और कपास की बुआई कम हुई है, लेकिन राज्य में गन्ने का रकबा पिछले साल की तुलना में चार गुना ज्यादा है। महाराष्ट्र में खाद्यान्न की बुआई 4 फीसदी, दलहन की 4 फीसदी, तिलहन 7 फीसदी हुई है, जबकि गन्ने की बुआई 24 फीसदी से ज्यादा हो चुकी है।

जून में पिछले 114 सालों में सबसे कम बारिश होने का असर सीधे फसलों की बुआई पर पड़ा है। महाराष्ट्र में पिछले साल की तुलना में बुआई बहुत कम हुई है, लेकिन गन्ने का रकबा पिछले साल की अपेक्षा अधिक है। महाराष्ट्र कृषि विभाग के आंकड़ों के मुताबिक 4 जून तक राज्य में गन्ने का रकबा 2.06 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया, जो सरकार द्वारा तय रकबे का 24.3 फीसदी है, जबकि पिछले साल इस समय तक गन्ने के लक्षित रकबे की महज 5.1 फीसदी बुआई हुई थी। राज्य में गन्ने का सामान्य रकबा 9.55 लाख हेक्टेयर है और इस साल राज्य सरकार ने रकबा 8.5 लाख हेक्टेयर तय किया है। गन्ने के अलावा दूसरी फसलों की बुआई पिछले साल की अपेक्षा बहुत कम हुई है। राज्य में दलहन की बुआई महज चार फीसदी हुई है, जबकि पिछले साल इस समय तक दलहनों की बुआई करीब 50 फीसदी हो चुकी थी। राज्य में दलहन का सामान्य रकबा 22.48 लाख हेक्टेयर और लक्षित रकबा 24.5 लाख हेक्टेयर है।

चालू सीजन में महाराष्ट्र सरकार ने तिलहन फसलों के बुआई का रकबा 34.83 लाख हेक्टेयर तय किया है, जिसमें अभी तक महज 7.1 फीसदी क्षेत्र में बुआई हो सकी है। पिछले साल इस समय तक राज्य में तिलहन फसलों की बुआई तय रकबे के करीब 62 फीसदी क्षेत्र में हो चुकी थी। खरीफ फसलों के कुल सामान्य रकबे के लिहाज से अभी तक महज 10.8 फीसदी बुआई हो पाई है, जबकि पिछले साल इस समय तक राज्य में करीब 45 फीसदी हिस्से में बुआई हो चुकी थी। चालू सीजन का सामान्य रकबा 144.26 लाख हेक्टेयर है, जबकि सरकार ने लक्ष्य 148.90 लाख हेक्टेयर तय किया है। किसान नेता राजू शेट्टी कहते हैं कि मॉनसून में देरी का सबसे बुरा असर किसान पर पड़ रहा है। इसका खमियाजा आगे सबको भुगतना होगा, क्योंकि पैदावार न होने के कारण कीमतें बढ़ेंगी, जिससे सभी प्रभावित होंगे।

महाराष्ट्र में गन्ने का रकबा पिछले साल की तुलना में चार गुना ज्यादा

गन्ने के रकबे में बढ़ोतरी पर शेतकरी संघटना से जुड़े अभय पाटिल कहते हैं कि दरअसल पिछले साल बारिश अच्छी हुई थी, इसलिए खेतों में फसल अच्छी दिख रही है। हकीकत यह है कि सभी फसलों का बुरा है। ऐंजल कमोडिटी के अनुज चौधरी कहते हैं चीनी कंपनियों को मिले सरकारी प्रोत्साहन का असर कीमतों पर पड़ेगा, जिसका असर अभी भी देखा जा सकता है। घरेलू बाजार में विदेशी चीनी महंगी होगी और सरकारी सब्सिडी कम करने से खुले बाजार में कीमतें बढ़ेंगी। चीनी की कीमत बढ़ने से गन्ना भी महंगा होगा, इसीलिए सरकार के इस फैसले से किसान खुश हैं। पिछले एक सप्ताह में गन्ने के दाम 3,040 रुपये प्रति क्विंटल हो गए, जबकि चुनाव के पहले चीनी की कीमत 2,900 रुपये प्रति क्विंटल के नीचे चल रही थी।

बिजनेस स्टैंडर्ड
8/7/16